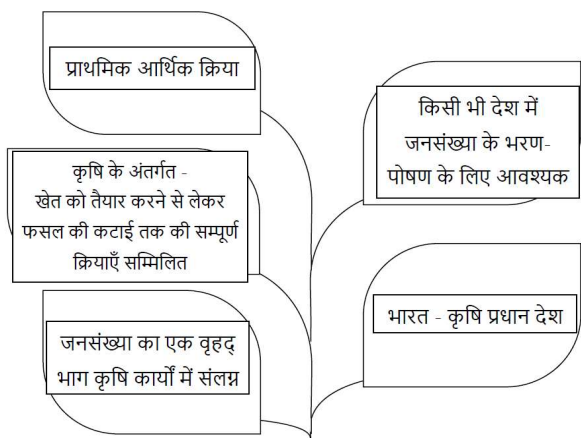
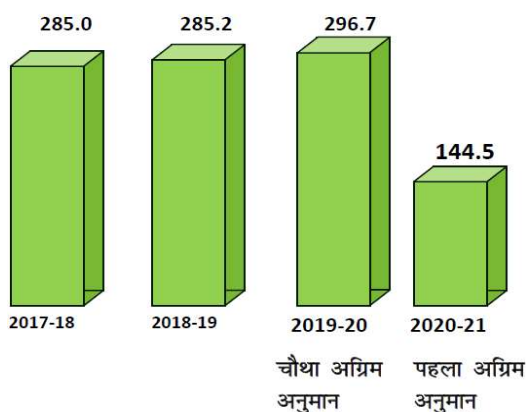


भारतीय कृषि



आर्थिक सर्वेक्षण 2020-21
खाद्यान्न उत्पादन मिलियन टन में



➤ भारतीय कृषि की विशेषताएँ

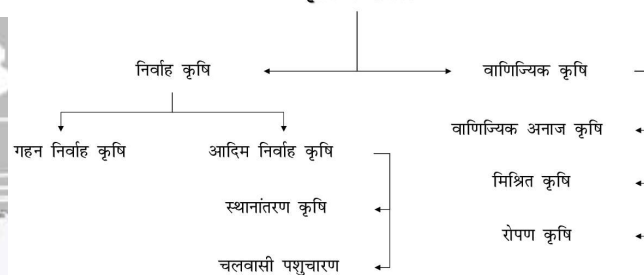
- जीवन निर्वाह प्रकृति
- जनसंख्या का उच्च दबाव
- वर्षा पर अधिक निर्भरता
- पारंपरिक/पिछड़ी तकनीक
- कुल फसलों में खाद्यान्न फसलों की प्रमुखता
- फसलों की विविधता

➤ भारतीय कृषि की समस्याएँ

- भारतीय कृषि की निम्न उत्पादकता
- जोत का आकार छोटा
- मानसून पर अधिक निर्भरता

- पारंपरिक व पुरानी तकनीक का प्रयोग
- उन्नत किस्म के बीजों का अभाव
- कृषि भूमि पर अधिक दबाव
- कृषि में पारंपरिक उर्वरकों का उपयोग
- कृषि भूमि का अधिकांश भाग परती भूमि
- फसल प्रतिरूप एक या दो फसली

कृषि के प्रकार



➤ गहन निर्वाह कृषि

- जोत का आकार छोटा
- खेतों की जुताई हेतु बैल, भैंस का प्रयोग
- घरेलू श्रम पर आधारित कृषि
- भूमि पर जनसंख्या का दबाव अधिक
- अनाज फसलों की प्रधानता
- भूमि उपयोग की उच्च तीव्रता
- श्रम गहन कृषि

➤ स्थानांतरण कृषि

- कर्तन दहन प्रणाली (Slash and Burn Agriculture) / झूम कृषि (Jhum Cultivation)
- प्रवासी आदिम कृषि
- स्थानांतरण कृषि को विश्व और भारत के विभिन्न भागों में भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता है।

स्थानांतरण कृषि के नाम

- मिल्पा
- कोनुको
- रोका
- मसोले
- लदांग
- रे
- तुंग्या
- चेना
- कैगिन

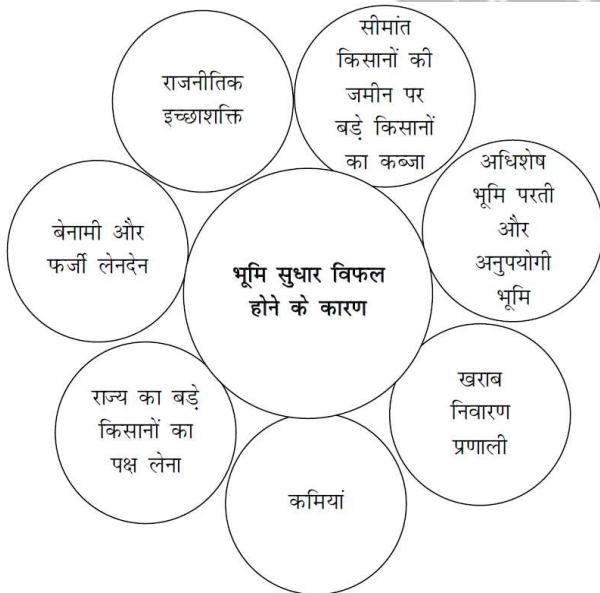
देश/स्थान

- मेक्सिको और मध्य अमेरिका
- वेनेजुएला
- ब्राजील
- कॉन्गो एवं मध्य अफ्रीका
- इंडोनेशिया एवं मलेशिया
- वियतनाम
- म्यांमार
- श्रीलंका
- फिलीपींस

नाम	भारत में स्थानांतरणशील कृषि संबंधी राज्य
<ul style="list-style-type: none"> • झूम • बेबर या डहिया • पोडु/पेंडा • कुमारी • कोमान पामाडावी • बालारे/वालटरे • खिल • कुरुवा • पामलू • दीपा 	<ul style="list-style-type: none"> • उत्तर-पूर्वी राज्यों (असम, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड) • मध्य प्रदेश • आंध्र प्रदेश • पश्चिमी घाट • ओडिशा • दक्षिणी-पूर्वी राजस्थान • हिमालयन क्षेत्र • झारखंड • मणिपुर • छत्तीसगढ़ का बस्तर जिला, अंडमान - निकोबार द्वीप समूह

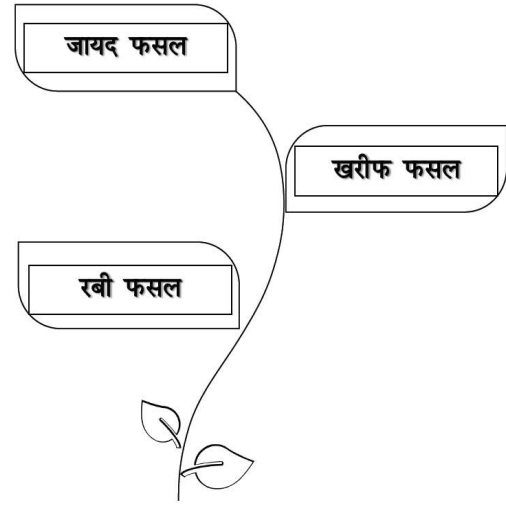
➤ **वाणिज्यिक कृषि**

- ☞ बाजार में विक्रय हेतु - फसल का उत्पादन
- ☞ विस्तृत कृषि क्षेत्र पर अधिकांश कार्य मशीनों द्वारा
- ☞ अधिक पूंजी का निवेश / पूंजी गहन
- ☞ अधिक पैदावार देने वाले बीजों, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग से उच्च उत्पादकता
- ☞ कृषि के वाणिज्यीकरण में प्रादेशिक स्तर पर भिन्नता
- ☞ श्रम गहन
- ☞ प्रसंस्करण अवसंरचना
- **रोपण कृषि**
- ☞ बड़े पैमाने पर श्रम एवं पूंजी के साथ-साथ परिवहन जाल के विकास की भी अनिवार्यता
- ☞ विश्व के उष्ण एवं उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में
- ☞ चाय, कहवा, काजू, रबड़, केला, कपास एवं गन्ना आदि की एकल फसलें प्रमुखता से उगाई जाती हैं।
- ☞ उद्योग और कृषि के बीच एक अंतरापृष्ठ (Interface)
- ☞ कृषि उत्पाद उद्योगों में कच्चे माल के रूप में प्रयोग



➤ **संरचनात्मक कारक**

- ☞ सिंचाई, ऊर्जा, मशीनीकरण व कीटनाशकों के साथ-साथ कृषि विपणन
- ☞ कृषि साख एवं पर्यावरण अनुकूल कृषि, न्यूनतम समर्थन मूल्य
- ☞ कृषि बीमा साख की उपलब्धता, कृषि वित्त
- ☞ ऋण प्रवाह, विपणन व भंडारण केन्द्रों तथा
- ☞ अन्य आधारभूत कृषि संरचना एवं विकास
- **भारत में फसल ऋतुएं**



- ☞ रबी फसल
- ☞ बोवाई- शीत ऋतु में (अक्टूबर से दिसंबर के मध्य)
- ☞ कटाई - ग्रीष्म ऋतु में (अप्रैल से जून के मध्य)
- ☞ बीज के अंकुरण व प्रारंभिक वृद्धि - ठण्डी जलवायु की आवश्यकता
- ☞ पकने के लिए अधिक तापमान एवं दीर्घ प्रकाश काल की आवश्यकता
- ☞ प्रमुख फसलें - गेहूँ, जौ, मटर, चना, सरसों, आलू, बरसीम, मसूर, अरहर
- ☞ विस्तार देश के व्यापक क्षेत्र में -
- ☞ उत्तर और उत्तरी पश्चिमी राज्य जैसे पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में गेहूँ और अन्य रबी फसलों के उत्पादन हेतु महत्वपूर्ण राज्य

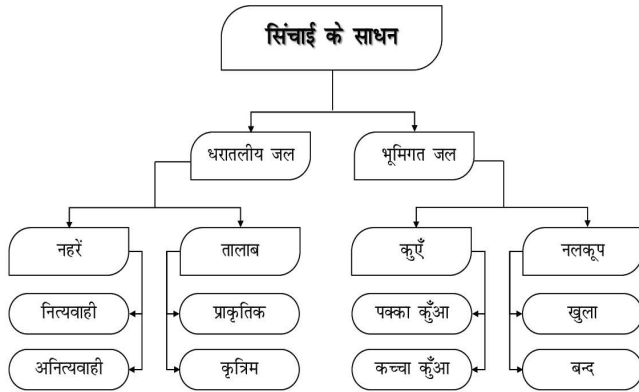
➤ **खरीफ फसल**

- ☞ बोवाई - मानसून के आगमन के साथ
- ☞ कटाई - सितंबर-अक्टूबर में
- ☞ बुआई के समय - अधिक तापमान एवं आर्द्रता
- ☞ पकते समय - शुष्क वातावरण की आवश्यकता
- ☞ प्रमुख फसलें - ज्वार, बाजरा, धान, मक्का, मूंग, सोयाबीन, लोबिया, मूंगफली, कपास, जूट, गन्ना, तम्बाकू, आदि

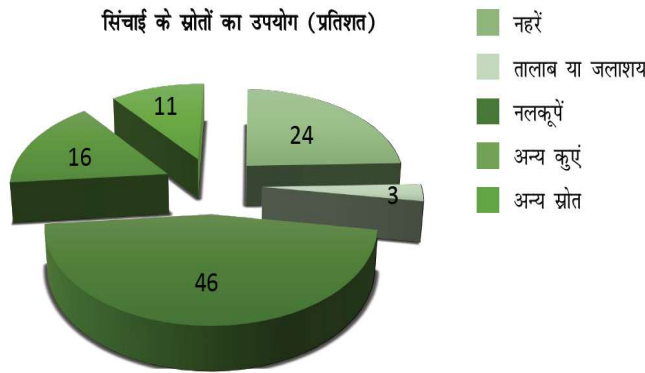
➤ **जायद फसल**

- ☞ बोवाई - कृत्रिम सिंचाई के माध्यम से संपूर्ण वर्ष
- ☞ तेज गर्मी और शुष्क हवाएँ सहन करने की अच्छी क्षमता

- ☞ दो श्रेणी में विभाजित
 1. जायद खरीफ
 2. जायद रबी
- सिंचाई



सिंचाई के स्रोतों का उपयोग (प्रतिशत)



➤ **कुआँ एवं नलकूप सिंचाई**

- ☞ भू-पृष्ठ के नीचे संचित जलराशि का प्रयोग कुआँ तथा नलकूपों की सहायता से
- ☞ वर्तमान में भारत में सिंचाई के सर्वप्रमुख साधन
- ☞ उत्तर प्रदेश > राजस्थान > पंजाब > मध्यप्रदेश > गुजरात
- ☞ अन्य राज्य - हरियाणा, बिहार, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश एवं कर्नाटक

➤ **कुआँ एवं नलकूप द्वारा सिंचाई के लाभ**

- ☞ अधिक सुगम एवं सस्ता साधन
- ☞ मृदा के लवणीय होने का खतरा नहीं
- ☞ कुआँ कहीं भी खोदना संभव
- ☞ किसान को कर देने से मुक्ति
- ☞ नहरों की अपेक्षा इसमें जल की बर्बादी कम
- ☞ अनेक रासायनिक तत्व, जैसे नाइट्रेट, क्लोराइड, सल्फेट व सोडा आदि की प्राप्ति

➤ **कुआँ एवं नलकूप द्वारा सिंचाई से हानि**

- ☞ सीमित क्षेत्र की ही सिंचाई
- ☞ अधिक जल प्राप्त करने से भूमिगत जल के हास की संभावना
- ☞ व्यय और परिश्रम अधिक
- ☞ ज्यादा भरोसेमंद व टिकाऊ नहीं

➤ **नहर सिंचाई के लाभ**

- ☞ वर्ष भर सिंचाई कार्य
- ☞ उपजाऊ मृदा का वाहक
- ☞ सुदूर क्षेत्रों में भी सिंचाई संभव
- ☞ जल विद्युत उत्पादन
- ☞ जल - परिवहन का साधन
- ☞ सस्ता रखरखाव

➤ **नहर सिंचाई से समस्याएँ**

- ☞ जलाक्रांतता की समस्या
- ☞ बाढ़ का स्रोत
- ☞ मलेरिया जैसी बीमारियों के होने का खतरा
- ☞ भूमि में लवणता की मात्रा में वृद्धि
- ☞ ऊबड़-खाबड़ धरातल पर सिंचाई संभव नहीं
- ☞ अनचाहे खरपतवारों का खेतों में प्रवेश

➤ **तालाब सिंचाई**

- ☞ भूमि का वह निम्न भाग जिसमें जल भरा होता है
- ☞ तालाब दो प्रकार के होते हैं
- ☞ प्राकृतिक तालाब - निचले स्थान, जो प्राकृतिक रूप से ही चारों ओर से ऊँचे स्थानों द्वारा घिरे होते हैं।
- ☞ कृत्रिम तालाबों - इस का निर्माण गड्ढे खोदकर तथा बाँध बनाकर किया जाता है।
- ☞ अधिकांश तालाब - दक्षिण के पठारी भाग में पाए जाते हैं।

➤ **तालाब सिंचाई के प्रमुख कारण -**

- ☞ प्राचीन कठोर चट्टानों से निर्मित ऊबड़-खाबड़ भूमि, जहाँ नहरें अथवा कुएँ खोदना असंभव
- ☞ कठोर होने के कारण अधिकांश चट्टानें अप्रवेश्य (Impermeable), जिनमें जल अवशोषण करने की क्षमता नहीं होती
- ☞ राज्य - मुख्यतः आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, उड़ीसा, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान

➤ **तालाब द्वारा सिंचाई के लाभ**

- ☞ निर्माण में कम खर्च
- ☞ अधिक टिकाऊ साधन
- ☞ मत्स्य उत्पादन

➤ **तालाब द्वारा सिंचाई से समस्याएँ**

- ☞ वर्ष भर सिंचाई संभव नहीं
- ☞ रख-रखाव अधिक खर्चीला
- ☞ सीमित क्षेत्र में ही सिंचाई संभव
- ☞ कठिन सिंचाई कार्य

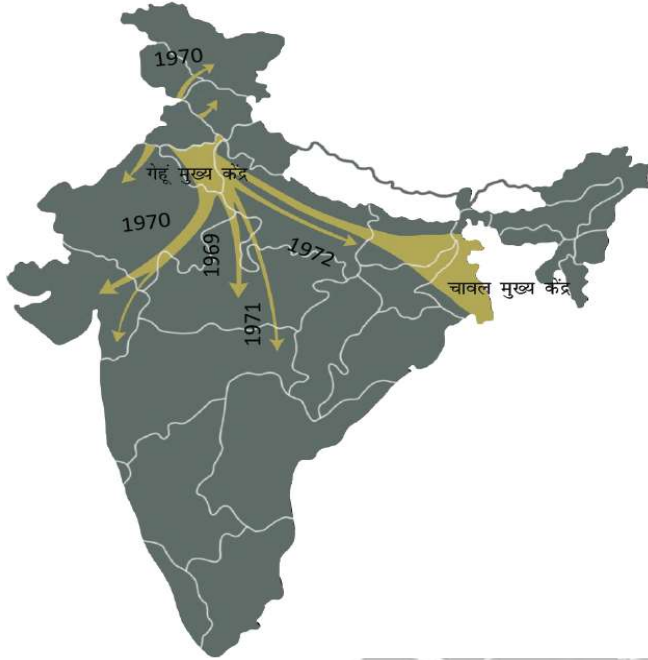
➤ **फर्टिगेशन**

- ☞ एक आधुनिक तकनीक
- ☞ उर्वरक के साथ-साथ सिंचाई तकनीकी का इस्तेमाल
- ☞ दबाव से बहती जलधारा में उर्वरक घोल का प्रवेश

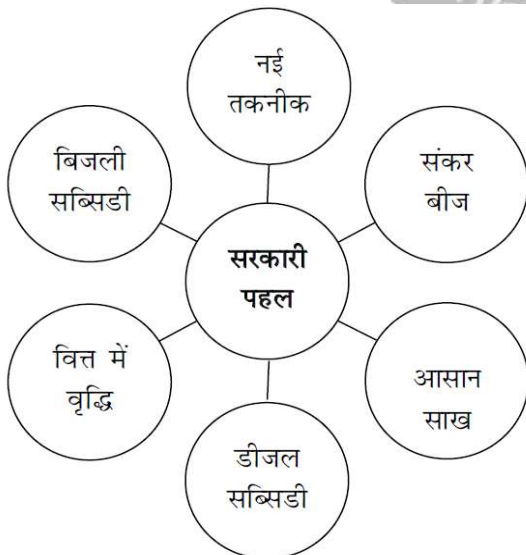
- ☛ प्रमुख - ड्रिप सिंचाई एवं छिड़काव या स्पिंकलर सिंचाई पद्धतियाँ
- **ड्रिप सिंचाई/टपक सिंचाई के लाभ**
- ☛ रेतीली मृदा, उबड़-खाबड़ खेत तथा बागों के लिए अधिक उपयोगी
- ☛ जल की बचत, बेहतर जल- अन्तर्वेशन, ऊर्जा की बचत, बेहतर उपज, लवणता नियंत्रण
- **छिड़काव सिंचाई**
- ☛ पाइप लाइन द्वारा पौधों पर फव्वारों के रूप में पानी का छिड़काव
- ☛ कपास, मूंगफली, तंबाकू आदि के लिए काफी उपयोगी
- ☛ रेगिस्तानी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त
- ☛ इससे 70 प्रतिशत तक जल की बचत
- **फसल प्रतिरूप/शस्य प्रतिरूप**
- ☛ किसी दिए गए समय में विभिन्न फसलों के लिए उपयोग किये जा रहे क्षेत्र का अंश
- ☛ गतिशील अवधारणा
- ☛ स्थान एवं समय के साथ परिवर्तनशील
- ☛ एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न
- **किसी क्षेत्र के शस्य प्रतिरूप को प्रभावित करने वाले कारक**
- ☛ भू-जलवायविक कारक- मृदा की प्रकृति, जलवायु, वर्षा आदि
- ☛ सामाजिक-सांस्कृतिक कारक - धर्म, रीति-रिवाजों, परंपरा इत्यादि
- ☛ आर्थिक कारक - कृषि वस्तुओं के मूल्य, किसानों की आय, भू जोतों का आकार, कृषि आदानों एवं विपणन सुविधाओं की उपलब्धता, भू-स्वामित्व की प्रकृति, वित्त की उपलब्धता आदि
- **फसल संकेन्द्रण**
- ☛ किसी क्षेत्र में एक निश्चित समय पर किसी फसल के घनत्व में विविधता
- **प्रभावित करने वाले कारक**
- ☛ भू-भाग
- ☛ जलवायु
- ☛ मृदा
- ☛ किसानों की कृषीय-पद्धति
- **कृषि दक्षता**
- ☛ कृषि उत्पादकता से किसी क्षेत्र की कृषि संभाव्यता का बोध होता है, परन्तु कृषि दक्षता कृषि के वर्तमान स्तर का प्रतीक है।
- ☛ कृषि उत्पादकता व्यापक शब्दावली है, जिसमें कृषि दक्षता समाविष्ट है।
- ☛ प्रति इकाई क्षेत्र में उच्चतम उत्पादन के अलावा प्रति श्रमिकों द्वारा उत्पादन तथा कृषि उत्पादकता का मूल्य।

- **हरित क्रांति**
- ☛ वर्ष 1960 के दशक में नॉर्मन बोरलॉग (Norman Borlaug) द्वारा शुरू किया गया एक प्रयास
- ☛ हरित क्रांति का प्रयोग अनाज के नए बीजों के विकास एवं वितरण हेतु किया गया
- ☛ उच्च गुणवत्ता वाले बीज, रासायनिक उर्वरकों व नहर सिंचाई पर आधारित कृषि उत्पादन की एक नवीन प्रक्रिया, जिसके द्वारा भारतीय कृषि में गत्यात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास किया गया।
- ☛ हरित क्रांति का जनक (Father of Green Revolution) - नॉर्मन अर्नेस्ट बोरलॉग तथा
- ☛ भारतीय संदर्भ में - एम. एस. स्वामीनाथन
- ☛ वर्ष 1960 के मध्य में स्थिति और भी दयनीय हो गई जब पूरे देश में अकाल की स्थिति बनने लगी। उन परिस्थितियों में भारत सरकार ने विदेशों से हाइब्रिड प्रजाति के बीज मंगाए। अपनी उच्च उत्पादकता के कारण इन बीजों को उच्च उत्पादकता किस्में (High Yielding Varieties and HYV) कहा जाता था।
- ☛ सर्वप्रथम इसको वर्ष 1960-63 के दौरान देश के 7 राज्यों के 7 चयनित जिलों में प्रयोग किया गया और इसे गहन कृषि जिला कार्यक्रम (Intensive Agriculture district programme and IADP) नाम दिया गया। यह प्रयोग सफल रहा तथा वर्ष 1966-67 में भारत में हरित क्रांति को औपचारिक तौर पर अपनाया गया।
- **हरित क्रांति की विशेषताएँ अथवा कारण**
- ☛ अधिक उपज देने वाले बीजों का प्रयोग (HYV SEEDS)
- ☛ रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग
- ☛ सिंचाई का विस्तार
- ☛ ग्रामीण विद्युतीकरण
- ☛ भूमि जोत और चकबंदी
- ☛ व्यवसायीकरण
- ☛ मृदा परीक्षण
- ☛ भू-संरक्षण
- **हरित क्रांति के उद्देश्य**
- ☛ राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा को सुनिश्चित करना।
- ☛ भारत को खाद्यान्न के उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाना।
- ☛ भारत में भुखमरी की समस्या को दूर करना।
- ☛ ग्रामीण विकास, औद्योगिक विकास पर आधारित समग्र कृषि का आधुनिकीकरण; बुनियादी ढाँचे का विकास, कच्चे माल की आपूर्ति आदि।
- ☛ कृषि और औद्योगिक दोनों क्षेत्र के श्रमिकों को रोजगार प्रदान करना।

- ☞ स्वस्थ पौधों का उत्पादन करना, जो अनुकूल/विषम जलवायु और रोगों का सामना करने में सक्षम हो।
- ☞ कृषि का वैश्वीकरण।



- हरित क्रांति के प्रभाव
 - ☞ कृषि उत्पादन में वृद्धि
 - ☞ किसानों की समृद्धि
 - ☞ खाद्यान्नों के आयात में कमी
 - ☞ पूँजीवादी खेती
 - ☞ लाभ का पुनर्निवेश
 - ☞ उद्योगों का विकास
 - ☞ मूल्यों पर प्रभाव
 - ☞ ग्रामीण रोजगार पर प्रभाव
 - ☞ किसानों की विचारधारा में परिवर्तन



➤ हरित क्रांति की उपलब्धियाँ

- ☞ गेहूँ, चावल, मक्का तथा बाजरा के उत्पादन में वृद्धि
- ☞ मुख्य खाद्यान्न के मामले में भारत आत्मनिर्भर बना
- ☞ भारतीय कृषि के गहनीकरण में वृद्धि
- ☞ उन क्षेत्रों में जहाँ हरित क्रांति सफल रही (विशेषकर पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तरप्रदेश) किसान निर्वाह अर्थव्यवस्था से बाजार अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने लगे
- ☞ जीव-वैज्ञानिक परिवर्तनों के क्षेत्र में रोजगार उत्पन्न हुए
- हरित क्रांति से उत्पन्न पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिक समस्याएँ

- ☞ जल-जमाव के कारण लीचिंग की समस्या
- ☞ लवणीकरण एवं क्षारीयकरण
- ☞ मृदा अपरदन, मृदा की उपजाऊ शक्ति का हास
- ☞ पर्यावरणीय प्रदूषण
- ☞ भौम जल स्तर में गिरावट
- ☞ कृषि भूमि के विस्तार से निर्वनीकरण की समस्या
- ☞ एक ही फसल के बार-बार उत्पादन से मरुस्थलीकरण की समस्या
- ☞ ध्वनि प्रदूषण

➤ वायु प्रदूषण की समस्या

- ☞ देश अभी भी दलहन-तिलहन के उत्पादन में आत्मनिर्भर नहीं है। अतः दलहन-तिलहन का आयात करना पड़ता है।
- ☞ नकदी फसलों के उत्पादन में वृद्धि हेतु
- ☞ किसानों को आर्थिक स्वतंत्रता और स्वायत्तता प्रदान करने हेतु
- ☞ देश के कृषि प्रसंस्करण उद्योगों को बढ़ावा देने हेतु
- ☞ जैविक खेती को बढ़ावा देने हेतु
- ☞ आर्थिक विषमता को दूर करने हेतु

➤ द्वितीय हरित क्रांति

- ☞ जैव-प्रौद्योगिकी के प्रयोग से संबंधित
- ☞ कृषि के पोषणीय विकास को ध्यान में रखकर विकसित की गयी, ताकि कृषि उत्पादन में लम्बे समय तक निरंतर वृद्धि हो सके।

☞ देश में बढ़ती हुई जनसंख्या के परिप्रेक्ष्य में भूतपूर्व राष्ट्रपति ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने द्वितीय हरित क्रांति की तत्काल आवश्यकता पर बल दिया।

☞ इस हरित क्रांति में मिट्टी से लेकर विपणन तक के सभी पक्षों का समावेश किया जाना था।

➤ नीली क्रांति के उद्देश्य

- ☞ देश की कुल मत्स्य उत्पादन (अंतर्देशीय तथा समुद्री क्षेत्रों में) की संभावना का पूर्ण रूप से दोहन करना।
- ☞ नई प्रौद्योगिकियों तथा प्रक्रियाओं पर विशेष ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ मात्स्यिकी के क्षेत्र को एक आधुनिक उद्योग के रूप में परिवर्तित करना।

- ई-कामर्स तथा अन्य प्रौद्योगिकियों और वैश्विक सर्वश्रेष्ठ नवोन्मेषों को शामिल करते हुए उत्पादकता बढ़ाने, बुनियादी सुविधाओं के बेहतर विपणन पर विशेष ध्यान केंद्रित करने के साथ-साथ मछुआरों और मत्स्य कृषकों की आय को दोगुना करना। आय की वृद्धि करने में मछुआरों और मत्स्य कृषकों की एकमात्र सहभागिता सुनिश्चित करना।
- देश की खाद्य और पोषण संबंधी सुरक्षा में वृद्धि करना।
- इसमें मछली पालन क्षेत्र के बदलाव, अधिक
- निवेश, बेहतर प्रशिक्षण और अवसंरचना के विकास की परिकल्पना है।
- नीली क्रांति मछली पकड़ने के नए बंदरगाहों के निर्माण, मछली पकड़ने की नौकाओं के आधुनिकीकरण, मछुआरों को प्रशिक्षण देने तथा स्व-रोजगार की गतिविधि के रूप में मछली पकड़ने को बढ़ावा देने पर बल देगी।
- भारत में इसकी शुरुआत सातवीं पंचवर्षीय योजना से हुई थी, जो वर्ष 1985 से वर्ष 1990 के बीच कार्यान्वित की गई। इस दौरान सरकार ने फिश फार्मर्स डेवलपमेंट एजेंसी (FFDA) को प्रायोजित किया।
- आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान सघन मरीन फिशरीज प्रोग्राम शुरू किया गया, जिसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियों से सहयोग को प्रोत्साहित किया गया।
- कुछ समय बाद पोरबंदर, विशाखापत्तनम, कोच्चि और पोर्ट ब्लेयर में फिशिंग बंदरगाह स्थापित किये गए।
- उत्पादन बढ़ाने साथ ही साथ प्रजातियों में सुधार के लिये बड़ी संख्या में अनुसंधान केंद्र भी स्थापित किये गए।

➤ **भारत में क्रांति**

 हरित क्रांति (खाद्यान्न उत्पादन)	 रजत क्रांति (अंडे)
 श्वेत क्रांति (दुग्ध उत्पादन)	 गोल क्रांति (आलू)
 पीली क्रांति (तिलहन क्रांति)	 गुलाबी क्रांति (मांस)
 नीली क्रांति (मछली पालन)	 धूसर क्रांति (उर्वरक)
 सुनहरी क्रांति (फल)	 लाल क्रांति (टमाटर)
 काली/ भूरी क्रांति (गैर परंपरागत ऊर्जा)	

➤ **इंद्रधनुषी क्रांति**

- वर्तमान में प्राथमिक क्षेत्र में व्याप्त नीली, हरी, पीली, गुलाबी, श्वेत, भूरी क्रांतियों को समेकित करते हुए इन्हें इंद्रधनुषी क्रांति अथवा सदाबहार क्रांति के अंतर्गत शामिल किया जाएगा।
- इस इंद्रधनुषी क्रांति का मुख्य उद्देश्य है कृषि क्षेत्र में उत्पादन की दर को बढ़ाकर 4% से ऊपर करना ।
- इसमें कृषि को अनुसंधान कार्य से जोड़ा जाएगा तथा इसे अनुसंधान शिक्षकों को सुनिश्चित किया जाएगा।

- इंद्रधनुषी क्रांति के अंतर्गत अनुबंधित कृषि तथा कृषि क्षेत्र में पूंजी निवेश की अनुमति जैसे उपाय भी अपनाए जाएंगे।

क्रांति का नाम	क्षेत्र
हरित क्रांति (Green Revolution)	खाद्यान्न उत्पादन से संबंधित
श्वेत क्रांति	दुग्ध उत्पादन से सम्बंधित
पीली क्रांति (Yellow Revolution)	खाद्य तेलों और तिलहन फसलों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए
नीली क्रांति (Blue Revolution)	मत्स्य उत्पादन में वृद्धि के लिए
गुलाबी क्रांति (Pink Revolution)	यह प्याज और झोंगा मछली के उत्पादन से सम्बंधित
काली क्रांति (Black Revolution)	पेट्रोलियम/खनिज तेलों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए
धूसर क्रांति (Grey Revolution)	उर्वरक उत्पादन में वृद्धि का लक्ष्य
रजत क्रांति (Silver Revolution)	भारत में अंडा उत्पादन और मुर्गियों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए
सुनहरी क्रांति (Golden Revolution)	बागवानी उत्पादन में वृद्धि से है जिसमें फल विशेषकर सेब उत्पादन, इसे शहद उत्पादन से भी जोड़ा जाता है
इंद्रधनुषी क्रांति	इसमें हरित, पीली, नीली, लाल, गुलाबी, भूरी, धूसर और अन्य सभी क्रांतियों को साथ लेकर चलने का लक्ष्य है
सदाबहार क्रांति (Rainbow Revolution)	इसका उद्देश्य देश की मिट्टी को उन्नत बनाना, किसानों को लोन दिलाना, रेन वाटर हार्वेस्टिंग एवं कृषि शोध को बढ़ाना है
गोल क्रांति (Round Revolution)	आलू के उत्पादन को बढ़ाना

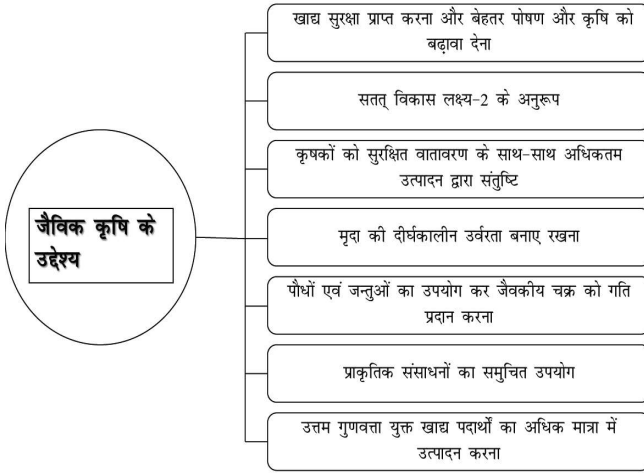
➤ **शुष्क कृषि की प्रमुख विशेषताएँ**

- यह मृदा की नमी पर आधारित कृषि का क्षेत्र है। यहाँ सिंचाई के लिए जल का अभाव रहता है।
- जीवन-निर्वाह कृषि का क्षेत्र
- श्रम सघन कृषि प्रति हेक्टेयर उत्पादकता कम, मृदा में नमी के अभाव के कारण बीज अंकुरण तथा पौध के विकास की समस्या रहती है।
- मानसून की अनिश्चितता रहती है।
- मोटे अनाज, दलहन, तिलहन और कपास जैसी फसलों की प्रधानता
- यहाँ उत्पादन में अत्यधिक उतार एवं चढ़ाव देखा जाता है।
- वर्षा की कमी के कारण परती भूमि में तेजी से वृद्धि हुई है।
- यह पशुपालन का क्षेत्र भी है। परती भूमि अधिक होने के कारण पशुपालन जैसी अर्थव्यवस्था का विकास हुआ है।
- यहाँ पेयजल का संकट रहता है।

➤ **जैविक कृषि**

- कृषि की वह विधि है जो संश्लेषित उर्वरकों एवं संश्लेषित कीटनाशकों का अप्रयोग या न्यूनतम प्रयोग पर आधारित होती है।
- जिसमें भूमि की उर्वरा शक्ति को बचाए रखने हेतु फसल चक्र, हरी खाद, कंपोस्ट आदि का प्रयोग किया जाता है।
- वर्ष 1990 के बाद से विश्व में जैविक उत्पादों का बाजार आज काफी बढ़ा है।
- मृदा, जल, रोगाणुओं और अपशिष्ट उत्पादों, वानिकी और कृषि जैसे प्राकृतिक तत्वों का एकीकरण शामिल
- भारत में जैविक खेती प्रारंभिक अवस्था में है।
- सिक्किम पूरी तरह से जैविक बनने वाला विश्व का पहला राज्य बन गया।

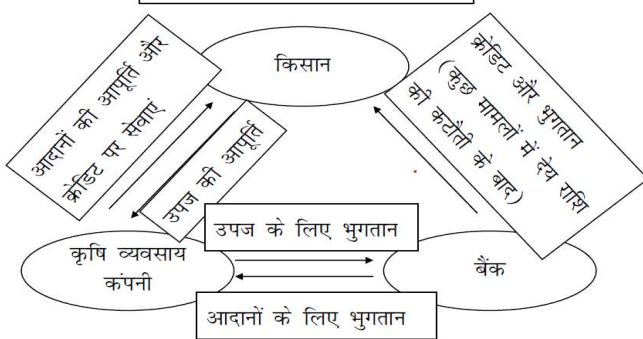
- ☛ त्रिपुरा एवं उत्तराखंड सहित अन्य राज्यों ने भी ठीक इसी तरह के लक्ष्य तय किए हैं।
- ☛ पूर्वोत्तर भारत पारंपरिक रूप से जैविक रहा है और यहां रसायनों की खपत देश के बाकी हिस्सों की तुलना में काफी कम है।
- ☛ केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के अनुसार, मार्च 2020 तक लगभग 2.78 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि जैविक कृषि के अधीन थी।
- ☛ यह देश में 140.1 मिलियन हेक्टेयर शुद्ध बुवाई क्षेत्र का दो प्रतिशत है।



➤ **अनुबंध कृषि / संविदा कृषि**

- ☛ खरीदारों (खाद्य प्रसंस्करण इकाई व निर्यात(d) तथा उत्पादकों के मध्य फसल- पूर्व समझौते या अनुबंध
- ☛ जिसके आधार पर कृषि उत्पादन (पशुधन व मुर्गीपालन) किया जाता है।
- ☛ समवर्ती सूची के तहत, जबकि कृषि राज्य सूची का विषय है।
- ☛ सरकार ने अनुबंध कृषि में संलग्न फर्मों को आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 के अंतर्गत खाद्य फसलों की भंडारण सीमा एवं आवाजाही पर मौजूद लाइसेंसिंग और प्रतिबंध से छूट दे रखी है।

त्रिपक्षीय समझौता मॉडल



- अनुबंध कृषि के लाभ
- ☛ किसानों के हितों की रक्षा

- ☛ कृषि में निजी भागीदारी
- ☛ किसानों की उत्पादकता में सुधार
- ☛ बेहतर मूल्य की खोज
- ☛ निर्यात में वृद्धि
- ☛ उपभोक्ताओं को लाभ

विगत वर्षों में पूछे गये प्रश्न

- कृषि में फर्टीगेशन (Fertigation) के क्या लाभ हैं?
 - सिंचाई जल की क्षारीयता का नियंत्रण संभव है।
 - रॉक फॉस्फेट और सभी अन्य फॉस्फेटिक उर्वरकों का सफलता के साथ अनुप्रयोग संभव है।
 - पौधों के लिये पोषक बढ़ी हुई मात्रा में सुलभ किये जा सकते हैं।
 - रासायनिक पोषकों के निक्षालन में कमी संभव है। उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) 1, 2 और 3	(b) 1, 2 और 4
(c) 1, 3 और 4	(d) 2, 3 और 4
- भारत में दालों के उत्पादन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :
 - उड़द की खेती खरीफ और रबी दोनों फसलों में की जा सकती है।
 - कुल दाल उत्पादन का लगभग आधा भाग केवल मूँग का होता है।
 - पिछले तीन दशकों में, जहाँ खरीफ दालों का उत्पादन बढ़ा है, वहीं रबी दालों का उत्पादन घटा है। उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1	(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 2	(c) केवल 2
d) 1, 2 और 3	
- 'यह फसल उपोष्ण प्रकृति की है। उसके लिये कठोर पाला हानिकारक है। विकास के लिये उसे कम से कम 210 पाला - रहित दिवसों और 50-100 सेंटीमीटर वर्षा की आवश्यकता पड़ती है। हल्की सुप्रवाहित मृदा जिसमें नमी धारण करने की क्षमता है, उसकी खेती के लिये आदर्श रूप से अनुकूल है। यह फसल निम्नलिखित में से कौन-सी है?

(a) कपास	(b) जूट
(c) गन्ना	(d) चाय
- भारत के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किस / किन पद्धतियों को पारितंत्र - अनुकूली कृषि माना जाता है?
 - फसल विविधरूपण
 - शिंब आधिक्य (Legume intensification)
 - टेंसियोमीटर का प्रयोग
 - ऊर्ध्वाधर कृषि (Vertical Farming)
 उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

- (a) 1, 2 और 3 (b) केवल 3
(c) केवल 4 (d) 1, 2, 3 और 4
5. भारतीय कृषि में परिस्थितियों के संदर्भ में, संरक्षण कृषि की संकल्पना का महत्व बढ़ जाता है। निम्नलिखित में से कौन कौन से संरक्षण कृषि के अंतर्गत आते हैं?
1. एकधान्य कृषि पद्धतियों का परिहार।
 2. न्यूनतम जोत को अपनाना।
 3. बागानी फसलों की खेती का परिहार छ
 4. मृदा धरातल को ढकने के लिए फसल अवशिष्ट का उपयोग।
 5. स्थानिक एवं कालिक फसल अनुक्रमण फसल आवर्तनों को अपनाकर सकती है।
- उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
- (a) 1, 3 और 4 (b) 2, 3, 4 और 5
(c) 2, 4 और 5 (d) 1, 2, 3 और 5
6. निम्नलिखित में से कौन-सा/से टपक (ड्रिप) सिंचाई पद्धति के प्रयोग का/के लाभ है/हैं?
1. खरपतवार में कमी
 2. मृदा लवणता में कमी
 3. मृदा अपरदन में कमी
- नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 3
(c) केवल 1 और 3 (d) उपर्युक्त में से कोई
7. भारत की निम्नलिखित फसलों पर विचार कीजिए:
1. मूंगफली
 2. तिल
 3. बाजरा
- उपर्युक्त में से कौन-सा / से प्रमुखतया वर्षा आधारित फसल है/हैं?
- (a) केवल 1 और 2 (c) केवल 3
(b) केवल 2 और 3 (d) 1, 2 और 3
8. निम्नलिखित में से कौन-सी मिश्रित खेती की प्रमुख विशेषता है?
- (a) नकदी और खाद्य दोनों शस्यों की साथ-साथ खेती
 - (b) दो या दो से अधिक शस्यों को एक ही खेत में उगाना
 - (c) पशुपालन और शस्य उत्पादन को एक साथ करना
 - (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

